लोककथाओं में निहित जीवन-मूल्य

डॉ.अर्चना निगम
हिन्दी विभाग
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल

सारांश (Abstract):- लोक साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक स्मृति , सामूहिक चेतना एवं ज्ञान परंपरा का संवाहक होता है।लोककथाएँ लोक साहित्य का महत्त्वपूर्ण भाग हैं, जो बेहद सरल-सहज एवं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्रदान करती हैं।भारतीय लोककथाएँ भारतीय समाज के सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की अमूल्य धरोहर हैं। इनमें जनजीवन की सहजता, नैतिकता, सत्य, करुणा, परोपकार, श्रम, नारी सम्मान, परिवार भावना और धर्मनिष्ठा जैसे जीवन मूल्यों का सजीव चित्रण मिलता है। लोककथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाने वाली शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं। इस शोधपत्र के माध्यम से लोककथाओं में निहित जीवन मूल्यों के विश्लेषण को समझा जा सकेगा।

बीज शब्द:--लोकसाहित्य,लोककथाएँ,जीवन मूल्य,ज्ञान परंपरा

परिचय:-भारत की लोक परंपरा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। लोककथाएँ लोकजीवन की आत्मा कही जाती हैं। ये पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से चलती आईं और समाज के नैतिक ढाँचे को मजबूत बनाती रहीं। लोक कथाएँ विविध रूपों में विश्व मानस में व्याप्त हैं, किंतु उन्हें समझना और उनसे तारतम्य बैठाने के लिए उनके पीछे व्याप्त मनोविज्ञान को समझना अति आवश्यक है। व्यक्ति के क्रियाकलापों जैसे सद- असद,पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म आदि को समझना और समझाने का अत्यंत सहज एवं महत्वपूर्ण साधन लोक कथाएँ हैं ।लोककथाएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये समाज को शिक्षित करने का एक माध्यम होने के साथ-मानव जीवन मूल्यों की संवाहक भी हैं। इनमें निहित जीवन मूल्य समाज को मानवीयता, सहयोग और सत्य की राह पर चलने की प्रेरणा देते हैं। लोक कथाएं अनुभव एवं विवेक के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को महत्व देती हैं।

शोध समीक्षा:- लोककथाओं पर पूर्व में किए गए शोध कार्यों पर नजर डालने पर हम पाते हैं कि लोक साहित्य के प्रमुख अध्येताओं हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामकुमार वर्मा, कुमुद शर्मा, देवेंद्र सत्यार्थी, विजय दान देथा जैसे विद्वानों ने अपने शोध एवं लेखन में लोक कथाओं की जनजीवन से निकटता एवं इनमें छिपे मानवतावादी संदेशों पर विशेष बल दिया है ।उनका मानना है कि लोक कथाएँ व्यक्ति के भीतर सदैव सत्य के पक्ष में खड़े होने की प्रेरणा जगाती हैं। देवेंद्र सत्यार्थी ने लोक परंपरा को 'जन की आत्मा' कहा है।उनकी कृतियों में लोक कथाओं में निहित जीवन आदर्श को प्रस्तुत किया गया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक कथाओं की संरचना,उनके कथन, शैली और चरित्र विन्यास पर प्रकाश डालते हुए इनमें निहित जीवन मूल्य जैसे सत्य,परिश्रम करुणा ,सम्मान सह-अस्तित्व , कर्तव्य भावना आदि के महत्व को दर्शाया है। आपका मानना था कि लोक कथा का नायक कोई असाधारण शक्तियों वाला पात्र नहीं बल्कि साधारण मनुष्य होता है और इसी साधारणता में उसकीअसाधारणता की सीख छिपी होती है। रामकुमार वर्मा ने अपनी कृतियों में लोक कथाओं के सामाजिक पहलू पर बल दिया है ।वे बताते हैं कि लोक कथाएं व्यक्ति को अपने समुदाय से जोड़ती हैं और जीवन को सहकारी दृष्टि प्रदान करती हैं। विजयदान देथा ने 14खंडों में राजस्थानी भाषा में 'बातां री फुलवाड़ी' नाम से लिखी अपनी लोक कथाओं के माध्यम से लोक कथाओं के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है ।

कुमुद शर्मा एवं शैलजा वाजपेयी ने भारतीय लोक कथाओं में नारी पात्रों की भूमिका का अध्ययन करते हुए पाया कि लोक कथाएँ महिलाओं को केवल परिवार की केंद्रीय धुरी के रूप में ही नहीं बल्कि संघर्षशील, धैर्यवान और मूल्य निष्ठ व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि लोक कथा में निहित जीवन मूल्य लैंगिक आधार पर भेदभाव नहीं करते बल्कि क्षमता और परस्पर सहयोग का संदेश देते हैं।

स्वरूप और उद्देश्य:-लोककथाएँ किसी विशेष व्यक्ति की रचना नहीं होतीं, वे सामूहिक चेतना की उपज हैं। इनका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ आत्मनियंत्रण, आत्म निरीक्षण ,नैतिक शिक्षाओं का प्रसार करना भी होता है। इनमें नायक,नायिका,पशु-पक्षी,राजा-रानी, विदूषक, भूत-प्रेत आदि पात्रों के माध्यम से जीवन के मौलिक दृष्टांत दिये जाते हैं।प्रसिद्ध लोक कथाओं जैसे पंचतंत्र ,जातक कथाएं,बातों की बगिया आदि में विभिन्न प्रकार के जीवन मूल्यों को दर्शाया गया है।जैसे-
सत्य और असत्य के संघर्ष की कहानियाँ।
कर्म और परिणाम का संबंध बताने वाली कथाएँ।
सामाजिक समरसता और नैतिकता का प्रचार करने वाली लोककथाएँ।

लोककथाओं में निहित प्रमुख जीवन मूल्य:-

सत्य और धर्म का पालन:- अधिकांश लोककथाओं में सत्य की विजय और असत्य के पतन का संदेश मिलता है। उदाहरणस्वरूप "सत्यवादी हरिश्चंद्र" की कथा जनमानस को सत्यनिष्ठा का संदेश देती है।

-परोपकार और सहानुभूति:- लोककथाएँ सिखाती हैं कि मानव जीवन का उद्देश्य दूसरों की सहायता करना है। जैसे पंचतंत्र की कहानियों में मित्रता, सहयोग और परोपकार का भाव प्रमुख है।

न्याय और समानता:- कई कथाएँ इस बात पर जोर देती हैं कि न्याय ही समाज का आधार है। राजा-प्रजा, गरीब-अमीर सभी के साथ समान व्यवहार जीवन का आदर्श मूल्य माना गया है।

परिश्रम और आत्मनिर्भरता:- लोककथाओं में परिश्रम का महत्त्व बार -बार प्रतिपादित होता है। "कौवा और घड़ा",कछुआ और खरगोश जैसी कथाएँ संदेश देती हैं कि बुद्धि और श्रम से हर कठिनाई को पार किया जा सकता है।

नारी सम्मान: भारतीय लोककथाएँ नारी के त्याग,ममता और सहनशीलता को उच्च स्थान देती हैं। 'सावित्री-सत्यवान' की कथा नारी शक्ति और निष्ठा का प्रतीक है।

परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यबोध:-लोककथाएँ व्यक्ति को परिवार और समाज के प्रति जिम्मेदार बनाती हैं तथा सबका भला सोचने की शिक्षा देती हैं।इसी प्रकार'श्रवण कुमार की कथा' पुत्र के माता-पिता के लिए प्रेम एवं कर्तव्य की शिक्षा देती हैं।
-लोक कथाएं पर्यावरण चेतना सामूहिक उत्तरदायित्व और प्रकृति के प्रति कर्तव्य का भी संदेश देती है।

लोककथाओं की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता:-आज के भौतिकतावादी युग में जब मानव मूल्य क्षीण होते जा रहे हैं, लोककथाएँ हमें हमारे मूल संस्कारों और जीवन आदर्शों की याद दिलाती हैं। वे बच्चों और युवाओं में नैतिक चेतना जागृत करने एवं उन्हें संवेदनशील बनाए रखने का प्रभावी माध्यम हैं।

निष्कर्ष:- लोक कथाओं के रूप में उपलब्ध साहित्य यह प्रमाणित करता है कि यह कथाएँ केवल शब्दों का जाल नहीं बल्कि समाज के अनुभव, संचित ज्ञान, नैतिकता एवं जीवन दर्शन की जीवंत विरासत है।

उनके भीतर निहित मूल्य व्यक्ति को केवल 'क्या करना चाहिए' का उपदेश नहीं देता बल्कि सरल-सहज रोशक ढंग एवं भावनात्मक घटनाओं के माध्यम से उसे सही दिशा में अग्रसर भी करता है। लोककथाएँ भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। इनमें निहित जीवन मूल्य आज भी उतने ही सार्थक हैं जितने प्राचीन काल में थे। ये कथाएँ समाज में नैतिकता, सदाचार और मानवीयता का संचार करती हैं। अतः इनका संरक्षण और प्रसार हमारी सांस्कृतिक एवं नैतिक जिम्मेदारी है।

****

संदर्भ सूची:

1. पाण्डेय, रामनरेश - भारतीय लोकसाहित्य का स्वरूप और संदेश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. मिश्र, श्यामसुंदर - लोककथाओं में निहित जीवन दर्शन, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
3. शर्मा, विष्णु -पंचतंत्र।
4. देवेंद्र सत्यार्थी - लोककथा और लोकसंस्कृति
5.देथा विजयदान -बातों की बगिया,भाग 9,राजस्था

Chemical Impacts of Fly Ash Pollution from Thermal Power Plants on the Singrauli Region

Vivek Verma
Assistant Professor - Chemistry
Prime Minister College of Excellence
Government Model Science College, Rewa (M.P.)

Abstract:-

The Singrauli region, known as India's 'Energy Capital,' has become a major hub of fly ash (FA) pollution generated from thermal power plants (TPPs). This research paper provides an in-depth analysis of the chemical impacts of FA emanating from TPPs, particularly the risks posed to soil, water, air, and human health through heavy metals such as arsenic (As: 10-100 mg/kg), mercury (Hg: 0.1-1 mg/kg), lead (Pb: 50-200 mg/kg), selenium (Se: 5-20 mg/kg), and cadmium (Cd: 1-10 mg/kg). In Singrauli, six major TPPs (such as NTPC Vindhyachal and Sasan UMPP) generate approximately 6 million tons of FA annually, which spreads into the environment through leaching processes from open ash ponds. Based on satellite data, field sampling, and laboratory analysis, the study found that ash concentration in the Rihand reservoir is 0.05-0.2 mg/L (WHO standard: 0.01 mg/L) and Hg at 21 ng/mL (normal: 5 ng/mL), which is 5-10 times higher in the rivers here. In soil, As levels of 15-50 mg/kg (standard: >20 mg/kg) and Pb of 100-300 mg/kg were detected, leading to a 25-35% reduction in fertility. Health risks such as respiratory diseases (50% affected), cancer, and neurological disorders (20% hyperpigmentation) have increased. The risk assessment model (Hazard Index: HI=2.8) indicates that long-term exposure could affect 70% of the region's population. Through this research, recommendations for mitigation measures such as FA recycling (current utilization: 30%), stricter monitoring, and policy reforms have been proposed. This study serves as a warning for sustainable development in coal-based regions like Singrauli, where industrial progress should not come at the cost of environmental damage and human life.

Keywords:- Fly ash, thermal power plants, Singrauli, heavy metal pollution, arsenic (10-100 mg/kg), mercury (0.1-1 mg/kg), leaching, environmental risks, health impacts, Rihand reservoir (As: 0.05-0.2 mg/L), soil pollution (Pb: 100-300 mg/kg).

Introduction:-

Coal-based thermal power plants play an indispensable role in meeting India's energy demands, but the fly ash generated as a by-product has emerged as a serious threat to the environment. The Singrauli region, located on the border of Uttar Pradesh and Madhya Pradesh,